भारत का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र से तात्पर्य, किसी क्षेत्र की जल प्रवाह से है अर्थात किसी क्षेत्र के जल को कौन सी नदियाँ बहाकर ले जाती है। इस प्रकार एक निश्चित **वाहिकाओं channels** के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को **अपवाह Drainage** तथा इन वाहिकाओ के जाल को **अपवाह तंत्र Drainage System** कहा जाता है।

किसी प्रदेश का अपवाह तंत्र धरातलीय रचना, भूमि के ढाल, संरचनात्मक नियंत्रण, शैलों के स्वरूप विवर्तनिक क्रियाओ, जल की प्राप्ति तथा अपवाह क्षेत्र के भूगर्भिक इतिहास पर निर्भर करता है

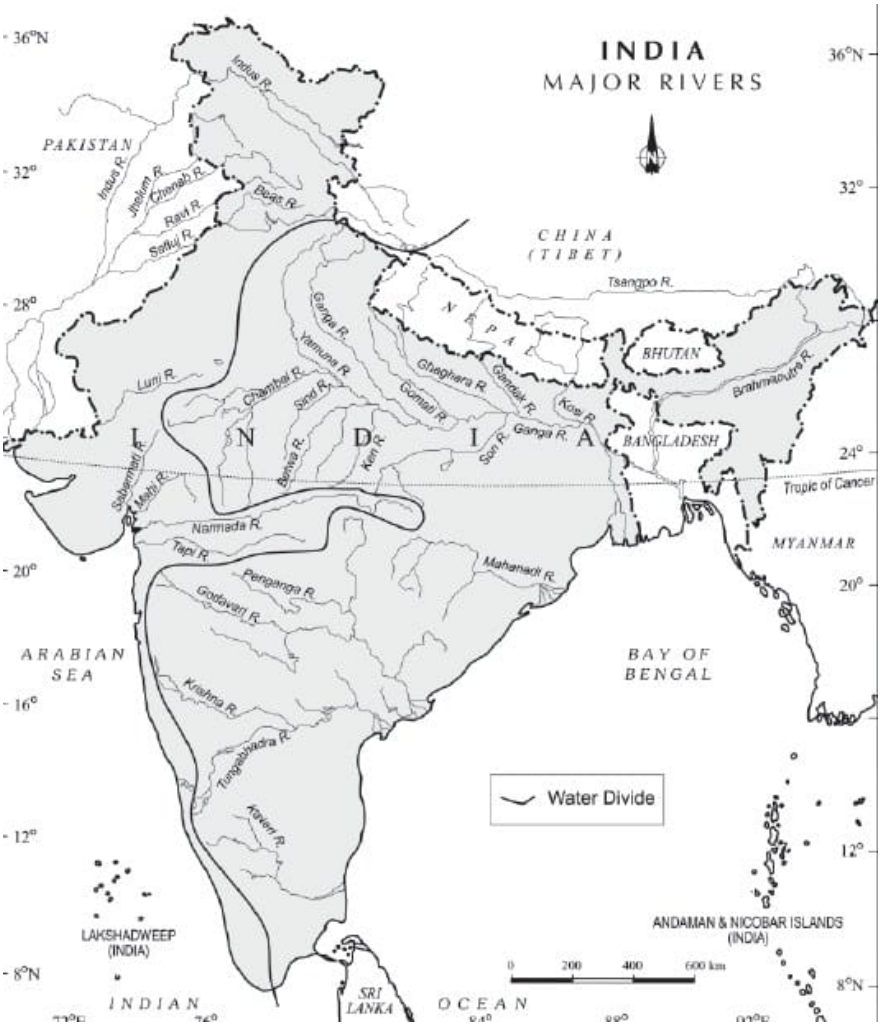

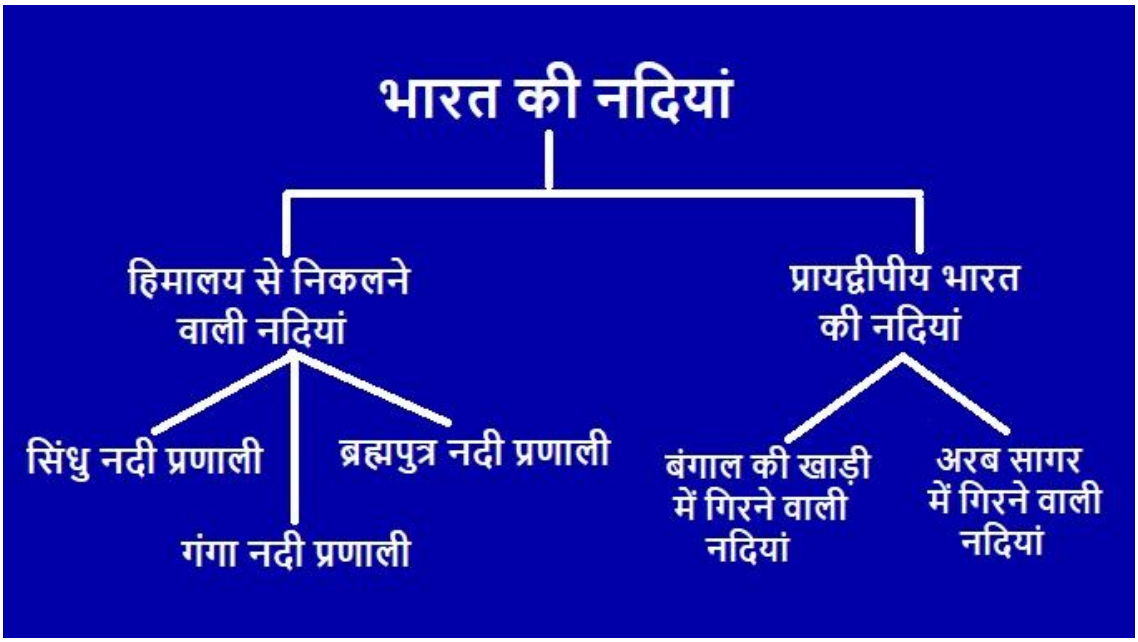

भारत की नदियों का वर्गीकरन दो प्रकार से हुआ हैं।

- हिमालय की नदियाँ
- प्रायद्वीपीय नदियाँ

हिमालय की नदियाँ

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ बर्फ़ और ग्लेशियरों(हिमानी या हिमनद) के पिघलने से बनी हैं अत: इनमें पूरे वर्ष के दौरान निरन्तर प्रवाह बना रहता है। हिमालय की नदियों के बेसिन बहुत बड़े हैं एवं उनके जलग्रहण क्षेत्र सैकड़ों-हजारों वर्ग किमी. में फैले हैं।

हिमालय की नदियों को तीन प्रमुख नदी-तंत्रों में विभाजित किया गया है।

- सिन्धु नदी-तंत्र,
- गंगा नदी-तंत्र
- ब्रह्मपुत्र नदी-तंत्र

सिन्धु नदी-तंत्र

- सिन्धु तिब्बत के मानसरोवर झील के निकट 'चेमायुंगडुंग' ग्लेशियर से निकलती है।
- सिन्धु नदी की लंबाई 2,880 किमी. है।
- भारत में इसकी लम्बाई 1,114 किमी.(पाक अधिकृत सहित, केवल भारत में 709 किमी.) है।
- इसका जल संग्रहण क्षेत्र 11.65 लाख वर्ग किमी. है।
- इसके अन्तर्गत सिन्धु एवं उसकी सहायक नदियां सम्मिलित है।
- 1960 में हुए 'सिन्धु जल समझौते' के अन्तर्गत भारत सिन्धु व उसकी सहायक नदियों में झेलम और चेनाब का 20 प्रतिशत जल उपयोग कर सकता है जबकि सतलज, रावी के 80 प्रतिशत जल का उपयोग कर सकता है।
- सिन्धु नदी भारत से होकर तत्पश्चात् पाकिस्तान से हो कर और अंतत: कराची के निकट अरब सागर में मिल जाती है।

सिन्धु की सहायक नदियां

- **दाँए तट पर आकर मिलने वाली नदियां-** श्योक, काबुल, कुर्रम, गोमल।
- **बाँए तट पर आकर मिलने वाली नदियां-** झेलम, चिनाब, सतलज, रावी, व्यास, जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट।

झेलम नदी

- यह पीरपंजाल पर्वत की श्रेणी में शेषनाग झील के पास वेरीनाग झरने से निकलती है और बहती हुई वूलर झील में मिलती है और अंत में चिनाब नदी में मिल जाती है।
- इसकी सहायक नदी किशनगंगा है, जिसे पाकिस्तान में नीलम कहा जाता है।
- श्रीनगर इसी नदी के किनारे बसा है।
- श्रीनगर में इस पर 'शिकार' या 'बजरे' अधिक चलाए जाते हैं।

चिनाब नदी

- यह नदी सिन्धु नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।
- जो हिमाचल प्रदेश में चन्द्रभागा कहलाती है।
- यह नदी लाहुल में बाड़ालाचा दर्रे के दोनों ओर से चन्द्र और भागा नामक दो नदियों के रूप में निकलती है।

रावी नदी

- इस नदी का उद्गम स्थल हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में रोहतांग दर्रे के समीप है।
- यह पंजाब की पांच नदियों में सबसे छोटी है।

व्यास

- इसका उद्गम स्थल भी हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में रोहतांग दर्रे के निकट व्यासकुंड है।
- यह सतलज की सहायक नदी है।
- यह कपूरथला के निकट 'हरिके' नामक स्थान पर सिन्धु से मिल जाती है।
- यह पुर्ण रूप से भारत में (460-470 किमी.) बहती है।

सतलज नदी

- यह तिब्बत में मानसरोवर के निकट **राकस ताल** से निकलती है और भारत में शिपकीला दर्रे के पास से प्रवेश करती है।
- स्पीति नदी इसकी प्रमुख सहायक नदी है
- यह एक मात्र पूर्ववर्ती नदी है , जो हिमालय के तीनों श्रेणियों को अपरदित कर प्रवाहित होती है।
- भाखड़ा नांगल बांध सतलज नदी पर बनाया गया है।
- भारत में इस नदी की लंबाई 1050 किमी है।

गंगा नदी तंत्र

गंगा नदी तंत्र के अंतर्गत गंगा तथा इसकी सहायक नदियों के अपवाह क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है। यह नदी तंत्र भारत के सबसे बड़ी नदी तंत्र है जिसका **क्षेत्रफल 8,61,452 वर्ग किमी** है। इस नदी तंत्र में हिमालय पर्वत से निकलने वाली अधिकांश नदियोंके साथ-साथ प्रायद्वीय पठार से निकलने वाली उन नदियों को शामिल किया जाता है जो **विंध्यन पर्वत, मालवा का पठार, बुंदेलखंड, बघेलखण्ड के पठार** निकलकर उत्तर की ओर प्रवाहित होते हुए गंगा और यमुना में मिलती है। जैसे:- **सिंध, केन, बेतवा, चंबल** आदि साथ ही साथ सोन, दामोदर नदी तंत्र को शामिल किया जाता है।

- भारत में सबसे बड़ा नदी तंत्र **गंगा नदी तंत्र** है।
- भारत में सबसे बड़ा जल ग्रहण क्षेत्र **गंगा नदी** का है।
- गंगा नदी दो देशों से होकर प्रवाहित होती है – **भारत** और **बांग्लादेश**।
- गंगा नदी का निर्माण उत्तराखण्ड में दो नदियों की संयुक्त धाराओं के मिलने से होता है। ये दो धारायें हैं – **भागीरथी नदी** और **अलकनंदा नदी**।
- भागीरथी नदी उत्तराखण्ड में **उत्तरकाशी** जिले में गोमुख के निकट **गंगोत्री ग्लेशियर** से निकलती है और **अलकनंदा नदी** सतोपथ ग्लेशियर से निकलती है।
- **भागीरथी** और **अलकनंदा** नदियां **देव प्रयाग** में मिलकर गंगा नदी का निर्माण करती हैं।
- **अलकनंदा नदी –**अलकनंदा नदी का निर्माण दो नदियों के संयुक्त धाराओं के मिलने से होता है – **धौली गंगा नदी** और **विष्णु गंगा नदी**।

- धौली गंगा नदी और विष्णु गंगा नदी **सतोपथ हिमानी** से निकलती हैं। ये दोनों नदियां **विष्णु प्रयाग** में आपस में मिल जाती हैं।
- धौली गंगा नदी और विष्णु गंगा नदी **विष्णु प्रयाग** में मिलकर **अलकनंदा नदी** का निर्माण करती है।
- **विष्णु प्रयाग** से आगे **कर्ण प्रयाग** में **पिण्डार नदी** अलकनंदा नदी से आकर मिल जाती है।
- **रूद्र प्रयाग** में **अलकनंदा नदी** से **मन्दाकिनी नदी** आकर मिलती है।
- रूद्र प्रयाग से आगे **देव प्रयाग** में **अलकनंदा नदी** से **भागीरथी नदी** आकर मिलती है। यहाँ पर इन दोनों नदियों की संयुक्त धारा **गंगा नदी** कहलाती है।
- गंगा नदी भारत में 5 राज्यों से होकर गुजरती है – **उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड** और **पश्चिम बंगाल।**
- गंगा नदी की सबसे ज्यादा लम्बाई **उत्तर प्रदेश** में है तथा सबसे कम लम्बाई **झारखंड राज्य** में है।
- गंगा नदी सर्वप्रथम **हरिद्वार** में पर्वतीय भाग से निकलकर मैदान में प्रवेश करती है।
- पश्चिम बंगाल में गंगा नदी दो वितरिकाओं में बंट जाती है – **भागीरथी** एवं **हुगली**। मुख्य नदी भागीरथी अर्थात् गंगा बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और हुगली नदी पश्चिम बंगाल में दक्षिण की ओर बहते हुए बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है।
- पश्चिम बंगाल में गंगा नदी को **भागीरथी नदी** भी कहते हैं।
- कोलकाता **हुगली नदी** के ही तट पर स्थित है।
- **छोटा नागपुर पठार** के बीचों-बीच भ्रंश घाटी में बहने वाली **दामोदर नदी** पूरब दिशा की ओर प्रवाहित होते हुए **हुगली नदी** में मिल जाती है।
- **गंगा नदी** की मुख्य धारा **भागीरथी नदी** अथवा **गंगा नदी** बांग्लादेश में पहुँचकर **पद्मा नदी** के नाम से जानी जाती है।
- **ब्रह्मपुत्र नदी** से मिलने के बाद **गंगा नदी** और **ब्रह्मपुत्र नदी** की संयुक्त धारा ही **पद्मा नदी** कहलाती है। आगे चलकर **पद्मा नदी** से **मेघना नदी** अथवा **बराक नदी** मिलती है, तो इन दोनों नदियों की मुख्य धारा **मेघना नदी** ही कहलाती है। अर्थात् **मेघना नदी** ही बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है।
- **बराक नदी** अथवा **मेघना नदी** '**मणिपुर**' से निकलती है।
- बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र नदी को **जमुना नदी** कहते हैं, अर्थात् **पद्मा नदी** और **जमुना नदी** की मुख्य धारा **पद्मा नदी** कहलाती है।

- **गंगा नदी** और **ब्रह्मपुत्र नदी** का डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है। गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र नदी के डेल्टा को **सुन्दरवन का डेल्टा** भी कहते हैं।
- सुन्दरवन के डेल्टा पर **सुन्दरी नामक वृक्ष** की बहुलता होने के कारण इसे सुन्दरवन का डेल्टा कहते हैं।
- सुन्दरवन डेल्टा का विस्तार **हुगली नदी** से लेकर **मेघना नदी** तक है।
- सुन्दरवन का डेल्टा मैंग्रोव वनों के लिए जाना जाता है। यहाँ पर मुख्य रूप से मैंग्रोव, कैसुरीना और सुन्दरी नामक वृक्ष पाये जाते हैं।
- मैंग्रोव वनों कि वनस्पतियों की लकड़ियाँ बहुत कठोर होती हैं और उनकी छाल नमकीन होती है, क्योंकि इन वनस्पतियों की जड़े डेल्टा क्षेत्र में समुद्र के जल में डूबी हुई होती हैं।
- भारत में **बंगाल टाइगर** मैंग्रोव वनों के क्षेत्र के अंतर्गत ही पाए जाते हैं, अर्थात् बंगाल टाइगर सुन्दरवन डेल्टा में पाए जाते हैं।
- भारत में पश्चिम बंगाल में मैंग्रोव वनों का क्षेत्रफल सर्वाधिक है। उसके बाद गुजरात दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आंध्र प्रदेश में **गोदावरी नदी** और **कृष्णा नदी** के डेल्टा में मैंग्रोव वनों का क्षेत्रफल सर्वाधिक है।

गंगा नदी की सहायक नदियां

- **दाँए तट पर आकर मिलने वाली नदियां-** यमुना, चम्बल, सिन्ध, बेतवा, केन, टोन्स और सोन नदियां हैं।
- **बाँए तट पर आकर मिलने वाली नदियां-** रामगंगा, गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी और महानंदा।

यमुना नदी

यमुना नदी गंगा नदी की सबसे लम्बी हिमालयी सहायक नदी है। यमुना नदी उत्तराखण्ड में **बन्दरपुच्छ चोटी** पर यमुनोत्री ग्लेशियर से निकलती है और प्रयागराज में गंगा नदी से आकर मिल जाती है। इसकी लम्बाई 1,370 किमी. है।

यमुना की प्रमुख सहायक नदियां हिंडन, ऋषि गंगा, चंबल, बेतवा, केन एवं सिंध है।

चम्बल नदी

- यमुना नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

- चम्बल मध्यप्रदेश के मऊ(इन्दौर) के समीप स्थित जानापाव पहाड़ी से निकलती है एवं इटावा के समीप यमुना नदी में मिलती है।
- चम्बल की सहायक नदियां - बनास, पार्वती, कालीसिंध एवं क्षिप्रा।
- बनास अरावली श्रेणी की खमनौर पहाड़ीयों से निकलती है एवं चंबल नदी में मिल जाती है।
- क्षिप्रा नदी इन्दौर के निकट काकरी पहाड़ी से निकलती है एवं चम्बल में मिलती है।
- उज्जैन में क्षिप्रा के तट पर महाकाल का मंदिर है एवं 12 वें वर्ष कुंभ का मेला लगता है।
- कालीसिंध मध्यप्रदेश के देवास जिले के बागली गांव में विन्ध्य पहाड़ी से निकलती है एवं चम्बल नदी में मिल जाती है।
- पार्वती नदी मध्य प्रदेश में विन्ध्य श्रेणी से निकलती है एवं राजस्थान में चंबल नदी में मिल जाती है।

बेतवा नदी

- यह मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में विन्ध्य पर्वत माला से निकलती है।
- हमीरपुर के निकट यमुना नदी में मिलती है।

सिन्ध

- यह गुना जिले के सिरोंज तहसील के पास से निकलती है।
- जयपुर के निकट यह यमुना से मिलती है।

केन नदी

- यह मध्यप्रदेश के सतना जिले में कैमूर की पहाड़ी से निकलती है
- बांदा के निकट यमुना में मिल जाती है।

तमसा (दक्षिणी टोंस) नदी

- कैमूर की पहाड़ीयों से निकलकर इलाहबाद से आगे गंगा नदी में मिलती है।

सोन नदी

- अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती है
- पटना से पश्चिम में गंगा के दाहिने तट पर मिलने वाली सहायक नदी है।

रामगंगा नदी

- यह नैनीताल (गैरसेण के निकट गढ़वाल की पहाड़ीयां) से निकलकर कन्नौज के समीप गंगा में मिलती है।

गोमती

- गोमती नदी गंगा नदी की एकमात्र सहायक नदी है, जो कि हिमालय से न निकलकर मैदानी क्षेत्र से निकलती है
- गोमती नदी का उद्गम उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले में तराई के मैदान में स्थित **फुल्हर झील** से होता है|
- **लखनऊ** और **जौनपुर** शहर **गोमती नदी** के तट पर ही बसे हैं|
- यह नदी गाजीपुर के निकट गंगा में मिलती है।

घाघरा (सरयु) नदी

- यह नेपाल के मपसा तुंग हिमानी से निकलती है एवं बिहार के छपरा के निकट गंगा में मिलती है।
- सहायक नदियां - राप्ती एवं शारदा।
- किनारे बसे शहर - अयोध्या, फैजाबाद, बलिया।

गण्डक नदी

- गण्डक को नेपाल में शालिग्रामी नदी नाम से जानी जाती है।
- भारत में पटना के निकट गंगा नदी में मिलती है।

कोसी नदी

- 7 धाराओं से मुख्य धारा अरूण नाम से माउण्ट एवरेस्ट के पास गोसाईथान चोटी से निकलती है।

- कोसी नदी **नेपाल** से निकलकर **बिहार राज्य** के भागलपुर जनपद में गंगा नदी में मिलती है।
- बार-बार अपना रास्ता बदलने एवं बाढ़ लाने के कारण यह नदी बिहार का शोक कहलाती है।

हुगली नदी

- प. बंगाल में गंगा की वितरिका के रूप में इसका उद्गम होता है तथा बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

महानन्दा नदी

- **महानन्दा नदी**, गंगा नदी के बाँए तट पर मिलने वाली गंगा नदी की **सबसे पूर्वी** अथवा **अन्तिम सहायक नदी** है
- महानन्दा का उद्गम पश्चिम बंगाल में **दार्जिलिंग की पहाड़ियों** से होता है।

ब्रह्मपुत्र नदी-तंत्र

ब्रह्मपुत्र नदी 2900 किमी लंबी नदी है, जोकि तीन देशो तिब्बत, भारत, नेपाल में विस्तृत है , जिसका अपवाह तंत्र 580080 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। भारत में यह 1346 किमी की लम्बाई में प्रवाहित होती है। ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट आंग्सी हिमनद से होता है। तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी सांग्पो नाम से जानी जाती है। यह नमचा बरबा पर्वत शिखर के निकट अरूणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है तब इसका नाम दिहांग होता है। बाद में इसकी 2 सहायक नदी दिबांग और लोहित के मिलने के बाद यह ब्रह्मपुत्र नाम से जानी जाती है। बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र को जमुना नाम से जाना जाता है। तीस्ता नदी ब्रह्मपुत्र से बांग्लादेश में मिलती है। इसके बाद ब्रह्मपुत्र पद्मा(गंगा) में मिल जाती है। असम घाटी में ब्रह्मपुत्र नदी के गुंफित होने से माजुली द्वीप का निर्माण हुआ है जोकि विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है।

ब्रह्मपुत्र नदी सहायक नदियां

- **दांयी तट पर आकर मिलने वाली नदियां** - सुबनसिरी, कामेंग, मानस, संकोज, तीस्ता।
- **बांयी तट पर आकर मिलने वाली नदियां** - लोहित, दिबांग, धनश्री, कालांग।

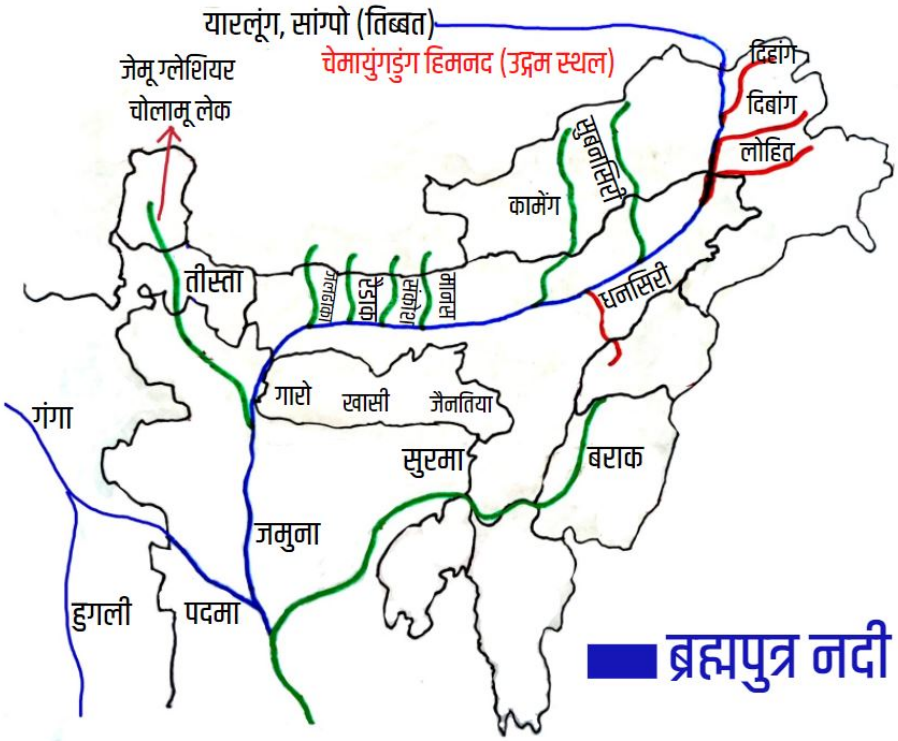

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र

भारतीय प्रायद्वीप में अनेक नदियां प्रवाहित हैं। मैदानी भाग की नदियों की अपेक्षा प्रायद्वीपीय भारत की नदियां आकार में छोटी हैं। यहां की नदियां अधिकांशतः मौसमी हैं और वर्षा पर आश्रित हैं। वर्षा ऋतु में इन नदियों के जल-स्तर में वृद्धि हो जाती है, पर शुष्क ऋतु में इनका जल-स्तर काफी कम हो जाता है। इस क्षेत्र की नदियां कम गहरी हैं, परंतु इन नदियों की घाटियां चौड़ी हैं और इनकी अपरदन क्षमता लगभग समाप्त हो चुकी है। यहां की अधिकांश नदियां बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, कुछ नदियां अरब सागर में गिरती हैं और कुछ नदियां गंगा तथा यमुना नदी में जाकर मिल जाती हैं। प्रायद्वीपीय क्षेत्र की कुछ नदियां अरावली तथा मध्यवर्ती पहाड़ी प्रदेश से निकलकर कच्छ के रन या खंभात की खाड़ी में गिरती हैं।

प्रायद्वीपीय नदियां दो भागों में विभक्त होती हैं -

- अरब सागर में गिरने वाली नदियां
- बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियां

अरब सागर में गिरने वाली नदियां

नर्मदा नदी

- नर्मदा नदी मैकाल पर्वत की अमरकंटक चोटी से निकलती है।
- यह नदी 1312 किमी लम्बी है इसका अपवाह क्षेत्र 98795 वर्ग किमी है।
- नर्मदा का प्रवाह क्षेत्र मध्यप्रदेश (87 प्रतिशत), गुजरात (11.5 प्रतिशत) एवं महाराष्ट्र (1.5 प्रतिशत) है।
- नर्मदा विन्ध्याचल पर्वत माला एवं सतपुडा पर्वतमाला के बीच भ्रंश घाटी में बहती है।
- यह अरबसागर में गिरने वाली प्रायद्वीपीय भारत की सबसे बड़ी नदी है।
- खंभात की खाड़ी में गिरने पर यह ज्वारनदमुख (एश्चुअरी) का निर्माण करती है।
- तवा, बरनेर, दूधी, शक्कर, हिरन, बरना, कोनार, माचक आदि नर्मदा की सहायक नदियाँ हैं।
- मध्य प्रदेश में नर्मदा जयंती पर अमर कंटक में तीन दिन के नर्मदा महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

तापी

- तापी मध्यप्रदेश के बैतुल जिले के मुल्लाई नामक स्थान से निकलती है।
- यह सतपुड़ा एवं अजंता पहाड़ी के बीच भ्रंश घाटी में बहती है।
- सतपुड़ा श्रेणी में 724 किमी की लम्बाई में पश्चिम की ओर प्रवाहित होती हुई खंभात की खाड़ी में अपना जल गिराती है एवं एश्चुअरी का निर्माण करती है।
- तापी नदी का बेसिन महाराष्ट्र(79 प्रतिशत), मध्यप्रदेश (15 प्रतिशत) एवं गुजरात (6 प्रतिशत) है।
- तापी की मुख्य सहायक नदी पूर्णा है।

साबरमती नदी

- यह उदयपुर(राजस्थान) के निकट अरावली पर्वत माला से निकलती है एवं गुजरात होते हुए खंभात की खाड़ी में अपना जल गिराती है।
- इस नदी की लम्बाई 320किमी है।
- अहमदाबाद इस नदी के किनारे स्थित सबसे बड़ा नगर है।

माही नदी

- माही नदी मध्य प्रदेश के धार जिले में विन्ध्याचल पर्वत से निकलती है इसका प्रवाह मध्यप्रदेश, राजस्थान और गुजरात राज्यों में है।
- इसकी सहायक नदियां सोम एवं जाखम है।
- यह खंभात की खाड़ी में अपना जल गिराती है।
- इस नदी की लम्बाई 553किमी है।

माण्डवी नदी

- माण्डवी नदी कर्नाटक राज्य में पश्चिमी घाट पर्वत के भीमगाड झरने से निकलकर पश्चिम दिशा में प्रवाहित होते हुए गोवा राज्य से प्रवाहित होने के बाद अरब सागर में गिरती है।

जुआरी नदी

- जुआरी नदी गोवा राज्य में पश्चिमी घाट से निकलकर पश्चिम दिशा में बहते हुए अरब सागर में गिरती है।
- यह गोवा की सबसे लंबी नदी है।

शरावती नदी

- यह नदी कर्नाटक राज्य में पश्चिमी घाट पर्वत की अम्बुतीर्थ नामक पहाड़ी से निकलती है एवं कर्नाटक राज्य में बहते हुए अरब सागर में गिरती है।
- जोग जलप्रपात इसी नदी पर स्थित है।

गंगावेली नदी

- यह नदी कर्नाटक राज्य में पश्चिमी घाट पर्वत से निकलकर कर्नाटक राज्य में बहते हुए अरब सागर में गिरती है।

पेरियार नदी

- यह अन्नामलाई पहाड़ी से निकलती है एवं केरल राज्य में बहते हुए अरबसागर में गिरती है।

- यह केरल की दूसरी सबसे लंबी नदी है।
- इसे केरल की जीवन रेखा भी कहा जाता है।
- इसका प्रवाह क्षेत्र केरल एवं तमिलनाडु राज्यों में है।

भरतपूजा नदी

- यह अन्नामलाई से निकलती है।
- इसका अन्य नाम पोन्नानी है।
- यह केरल की सबसे लंबी नदी है।
- इसका प्रवाह क्षेत्र केरल एवं तमिलनाडु है।

अंतःस्थलीय नदियाँ

कुछ नदियाँ ऐसी होती है जो सागर तक नहीं पहुंच पाती और रास्ते में ही लुप्त हो जाती हैं। ये अंतःस्थलीय नदियाँ कहलाती हैं। घग्घर, लुनी नदी इसके मुख्य उदाहरण हैं।

घग्घर

- घग्घर एक मौसमी नदी हैं जो हिमालय की निचली ढालों से (कालका के समीप) निकलती है और अनुपगढ़ (राजस्थान) में लुप्त हो जाती हैं।
- घग्घर को ही वैदिक काल की सरस्वती माना जाता है।

लूनी नदी

- यह नदी राजस्थान के अजमेर जिले के दक्षिण-पश्चिम में अरावली श्रेणी में स्थित नाग पर्वत से निकलकर 320 किमी की लम्बाई में प्रवाहित होते हुये कच्छ के रन में विलुप्त हो जाती है।
- सरस्वती, जवाई, सूखड़ी, लीलड़ी, मीठड़ी इसकी सहायक नदियाँ है।
- सरस्वती का उद्गम पुस्कर झील से हुआ है।

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियां

हुगली

- यह नदी प. बंगाल में गंगा नदी की वितरिका के रूप में उद्गमित होती है
- यह बंगाल की खाड़ी में जल गिराती है।

दामोदर

- यह छोटा नागपुर पठार, पलामू जिला, झारखण्ड से निकलती है पूर्व दिशा में बहते हुए प. बंगाल में हुगली नदी में मिल जाती है।
- यह अतिप्रदूषित नदी है।
- यह बंगाल का शोक कहलाती है।
- इसका प्रवाह क्षेत्र झारखण्ड एवं प. बंगाल राज्य है।

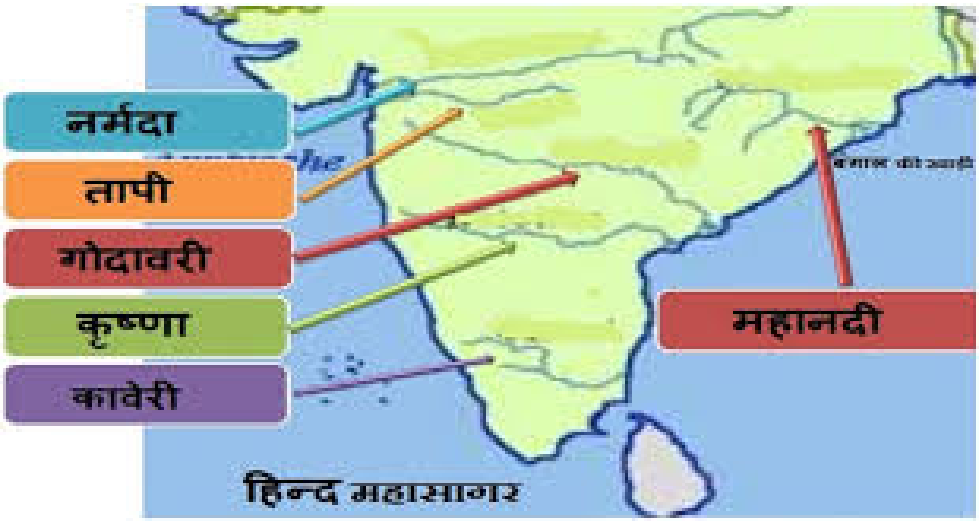

स्वर्ण रेखा नदी

- यह नदी रांची के पठार से निकलती है।
- यह पश्चिम बंगाल उड़ीसा के बीच सीमा रेखा बनाती है।
- यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
- इसकी कुल लम्बाई 395किमी है।

वैतरणी नदी

- यह ओडीसा के क्योंझर जिले से निकलती है।
- इसका प्रवाह क्षेत्र उड़ीसा एवं झारखण्ड राज्य है।
- यह बंगाल की खाड़ी में जल गिराती है।

ब्राह्मणी नदी

- यह नदी छोटा नागपुर पठार के निकट राँची के दक्षिण-पश्चिम से निकलती है।
- इसकी उत्पत्ति उड़ीसा राज्य की कोयेल एवं शंख नदियों की धाराओं के मिलने से हुई है।
- यह बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है।
- इस नदी की लम्बाई 420किमी है।

महानदी

- यह एक अनुवर्ती नदी है
- छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में सिंहावा श्रेणी के समीप अमरकंटक पठार से निकलकर पूर्व व दक्षिण –पूर्व की ओर प्रवाहित होती हुई कटक के निकट बंगाल की खाड़ी में डेल्टा बनाती है।
- इसका प्रवाह क्षेत्र छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा राज्य में है।
- शिवनाथ, हंसदेव, मंड व डूब नदियाँ उत्तर की ओर से तथा जोंक व तेल दक्षिण की ओर से आकर इसमें मिलती है।

गोदावरी नदी

- यह प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लंबी नदी है।
- गोदावरी नदी का उद्गम नासिक जिले की त्र्यम्बक पहाड़ी से होता है।
- गोदावरी को 'दक्षिण गंगा' व 'वृद्ध गंगा' भी कहा जाता है।
- इस नदी की लम्बाई 1465किमी है।
- गोदावरी महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसढ़, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक एवं यनम (पुदुचेरी) राज्यों से होकर बहती है।

- दुधना, पूर्ण, पेनगंगा, वेनगंगा, इन्द्रावती, सेलूरी, प्राणहिता एवं मंजरा/मंजीरा दक्षिण से मिलने वाली प्रमुख नदियाँ हैं।

कृष्णा नदी

- कृष्णा नदी का उद्गम महाबलेश्वर से होता है।
- यह प्रायद्वीपीय भारत की दूसरी सबसे लंबी नदी है।
- यह नदी पश्चमी घाट के महाबलेश्वर से निकलती है
- इसकी लम्बाई 1400किमी है।
- यह बंगाल की खाड़ी में डेल्टा बनाती है।
- यह महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना एवं आंध्रप्रदेश से होकर बहती है।
- इसकी सहायक नदियाँ भीमा, तुंगभद्रा, कोयना, वर्णा, पंचगंगा, घाटप्रभा, दूधगंगा, मालप्रभा एवं मूसी यरला है ।

कावेरी नदी

- कावेरी कर्नाटक राज्य के कुर्ग जिले की ब्रह्मगिरी की पहाड़ीयों से निकलती है।
- दक्षिण भारत की यह एकमात्र नदी है जिसमें वर्ष भर सत्त रूप से जल प्रवाह बना रहता है।
- इसका कारण है - कावेरी का ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र (कर्नाटक) दक्षिण-पश्चिम मानसून से वर्षा जल प्राप्त करता है जबकि निचला जलग्रहण क्षेत्र (तमिलनाडु), उत्तरी-पूर्वी मानसून से जल प्राप्त करता है।
- इसके अपवाह का 56 प्रतिशत तमिलनाडु, 41 प्रतिशत कर्नाटक व 3 प्रतिशत केरल में पड़ता है।
- इसको दक्षिण भारत की गंगा कहते है
- इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ उत्तर में हेमावती, लोकापावनी, शिम्सा व अर्कवती, दक्षिण में लक्ष्मणतीर्थ, कंबिनी, सुवर्णावती, भवानी, अमरावती हैं।

वैगाई नदी

- यह तमिलनाडु के वरशानद पहाड़ी से निकलती है
- यह पाक की खाड़ी में अपना जल गिराती है।
- मदुरै इसी नदी के तट पर स्थित है।

ताम्रपर्णी नदी

- यह तमिलनाडु राज्य में बहती है
- इसका उद्गम दक्षिण सहद्रि में स्थित अगस्त्यमलाई पहाड़ी के ढालों से होता है
- यह मन्नार की खाड़ी में अपना जल गिराती है।

पेन्नार नदी

- यह कर्नाटक के कोलार जिले की नंदीदुर्ग पहाड़ी से निकलती है।
- इसका अपवाह क्षेत्र कृष्ण तथा कावेरी के मध्य 55213 वर्ग किमी है।